

## उपसंहार

गांधी दर्शन की सार्थकता यह है कि केवल आध्यात्मिक ही नहीं व्यवहारिक तथा सामाजिक भी है। यह मनुष्य की अभिरुचि प्रवृत्ति और क्षमता के अनुकूल किसी तात्विक साधन को अपनाने का परामर्श भी देता है। यही शोध विषय की सार्थकता तत्व मीमांसात्मक विचार मीमांसा को प्रमाणित करता है।

इस शोध विषय को अध्ययन के रूप में 'चार अध्यायों' में व्यक्त किया गया है, जिन्हें गांधी दर्शन के 'मूलतत्वों' के रूप में मीमांसात्मक विवेचना की गई है। गांधी दर्शन से सम्बन्धित चार मूलतत्वों का जो विश्लेषण है वे चार मूलतत्व निम्नक्रम में हैं -

1. मनुष्य
2. जगत
3. ईश्वर
4. सत्य

इन चारों मूल तत्वों को इस शोध विषय में समाहित कर गांधी दर्शन की मीमांसा की गई है। शोध विषय में गांधी दर्शन में प्रथम मूल तत्व के रूप में मनुष्य को इसलिए रखा गया है क्योंकि इस सृष्टि जगत में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए हमेशा या प्रायः नवीन ज्ञान की खोज करने के लिए वह अपने जिज्ञासा के अनुकूल ही इस सृष्टि जगत में नवीनता लाने के लिए प्रयासरत रहता है।

इन चारों मूल तत्वों में शोध विषय के द्वितीय तत्व के रूप में 'जगत' है। जगत को गांधी दर्शन के मूल तत्व के रूप में इसलिए मीमांसात्मक विवेचना की गई है कि मनुष्य की अपनी अस्तित्व की सिद्धि हेतु अपनी यथार्थता की स्थापित करने के लिए जगत का होना अनिवार्य है। बिना जगत के मनुष्य के अस्तित्व की सिद्धि नहीं हो सकती है। इसलिए मनुष्य के अस्तित्व सिद्धि हेतु जगत एक प्रयोगशाला के रूप में है। वह इसी जगत में अपने हर कार्यों को मूल रूप देता है। इसलिए गांधी जी के मतानुसार मनुष्य के अस्तित्व सिद्धि के लिए तात्विक जगत का भी होना अनिवार्य है।

‘ईश्वर’ की इस शोध विषय में तृतीय मूल तत्व के रूप में मीमांसात्मक विवेचना इसलिए की गई है क्योंकि मनुष्य अपनी जिज्ञासा को शांत करने के लिए इस जगत में आस्था और विश्वास को स्थापित करना चाहता है। और इस प्रमाणीकरण के हेतु उसे अनुकूल रूप में ईश्वर ही एक प्रमाण के रूप में दिखता है। क्योंकि ईश्वर पर ही सभी मनुष्यों की आस्था और विश्वास होता है मैं हूँ तो मेरा इस जगत में अस्तित्व के रूप में लाने वाला कोई अवश्य है जो इसका पालन करता हो और वह पालन करने वाला ही नियामक होता है। इसलिए सृष्टि जगत के रूप में मनुष्य को ईश्वर पर ही विश्वास होती है। इसीलिए इस शोध विषय में ईश्वर को तृतीय मूल तत्व के रूप में भी मीमांसात्मक विवेचना का विश्लेषण भी किया गया है।

‘सत्य’ को इस शोध विषय में चतुर्थ मूल तत्व के रूप में मीमांसात्मक विवेचना इसलिए की गई है, क्योंकि सत्य ही एक ऐसा मूल तत्व जिससे सृष्टि जगत में विचार और वास्तविकता को यथार्थता के रूप में प्रदान करता है। अगर मनुष्य है तो क्यों है ? इसका इस जगत से क्या सम्बन्ध है ? मनुष्य और जगत का अस्तित्व लाने वाला अवश्य कोई न कोई होगा और उसका नाम मनुष्य अपने विचार और वास्तविकता के अनुसार ही ईश्वर के रूप में जनता है और इस जिज्ञासा को पूर्ण करने का कार्य सिर्फ मूल तत्व सत्य ही करता है। यही इस शोध विषय में मूल तत्वों को प्रमाणीकरण मैंने किया है।

इसलिए इस शोध विषय के अंतर्गत ‘Thirst Area’ के रूप में तत्वमीमांसा की जो सम्प्राप्ति (Finding) हुई है उससे मुझे संतुष्टि मिली है क्योंकि गांधी दर्शन के तात्त्विक विचार मीमांसा से अवगत इसी शोध विषय पर कार्य करने से मुझे हुई है।

इस शोध विषय पर कार्य अध्ययन करने से मुझे अपने विषय दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण संभावित नवीनता भी प्राप्त हुई है। इस शोध विषय के आधार पर मुझे गांधी दर्शन के तात्त्विक विचार मीमांसा के ज्ञान की नवीनता प्राप्त हुई है, और फलतः यह आशा करता हूँ कि यह शोध विषय समाज में गांधी के दार्शनिक विचार मीमांसासे अवगत कराने में सफलीभूत होगी।